Toppersnotes
Unleash the topper in you

कृषि – पर्यवेक्षक

(AGRICULTURE SUPERVISOR)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 1

सामान्य हिन्दी
एवं
राजस्थान का भूगोल, इतिहास व कला संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

हिन्दी

1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	3
3.	विशेषण	5
4.	क्रिया	8
5.	लिंग	9
6.	वचन	15
7.	वाच्य	20
8.	कारक	23
9.	वृत्ति, पक्ष	32
10.	संधि	36
11.	समास	42
12.	उपसर्ग	46
13.	प्रत्यय	49
14.	तत्सम - तद्भव	53
15.	पर्यायवाची	55
16.	विलोम शब्द	65
17.	शब्द युग्म	72
18.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	82
19.	वाक्य रचना	87
20.	वाक्य शुद्धि	91
21.	शुद्ध वाक्य	94
22.	मुहावरे	101
23.	लोकोक्ति	113

राजस्थान का भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल 130
2. राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग 134
3. राजस्थान का अपवाह तंत्र 143
4. राजस्थान की झीलें 150
5. राजस्थान की जलवायु 153
6. राजस्थान में मृदा संसाधन 158
7. राजस्थान में वन-संसाधन एवं वनस्पति 162
8. राजस्थान में खनिज सम्पदा 165
9. राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत 172
10. राजस्थान में पशुधन 179
11. राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ 183
12. राजस्थान की जनसंख्या 192
13. राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण 195
14. राजस्थान में उद्योग 199

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1. प्राचीन राजस्थान का इतिहास 204
   - परिचय
   - प्राचीन सभ्यताएँ
2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 212
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
   - राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ

3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 247

- 1857 की क्रांति
- प्रमुख किसान आन्दोलन
- प्रमुख जनजातिय आन्दोलन
- प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन
- राजस्थान का एकीकरण

4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 259

- राजस्थान के त्योहार
- राजस्थान के लोक देवता
- राजस्थान की लोक देवियाँ
- राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय
- राजस्थान के लोकगीत
- राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ
- राजस्थान के संगीत
- राजस्थान के लोक नृत्य
- राजस्थान के लोकनाट्य
- राजस्थान की जनजातियाँ
- राजस्थान की चित्रकला
- राजस्थान की हस्तकलाएँ
- राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ

5. राजस्थान की स्थापत्य कला 297

- किले एवं स्मारक
- राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
- राजस्थान का खान-पान, वेश-भूषा एवं आभूषण

हिन्दी

संज्ञा

परिभाषा :-

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है- 'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान कराने वाला अतः किसी भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, वर्ग, भाव स्थिति आदि का परिचय कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते है । संज्ञा का पर्याय है- नाम । किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु स्थान, स्थिति, वर्ग, भाव, विचार के नाम को संज्ञा कहते है ।

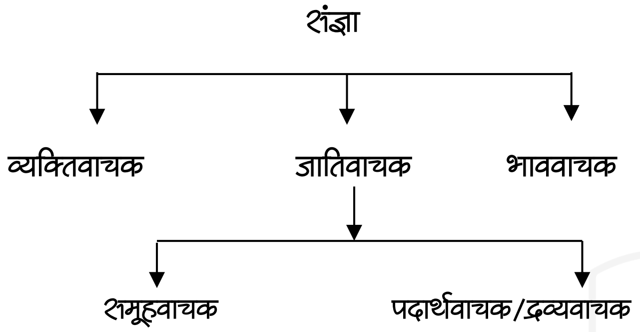

संज्ञा के भेदः-

व्यक्ति, गुण, वस्तु, भाव, स्थान आदि के आधार पर संज्ञा के तीन भेद माने गए है -

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष या वस्तु विशेष का बोध कराते है ,उन्हे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है । जैसे - गौतम बुद्ध, हिमालय, ताजमहल, सीता, गंगा, जयपुर, रामायण आदि । व्यक्तिवाचक संज्ञा की विशेषता यह है कि (1) यह दुनिया मे एक ही होती है और (2) इसकों हम पहले से जानने के आधार पर ही पहचान सकते है । गंगा/ताजमहल/रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, समझा है तभी हम पहचान सकते है कि यह नदी तो गंगा है, यह भवन ताजमहल है, यह पुस्तक रामायण है, अचानक पहली बार देखने से नही ।

2. जातिवाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति/वर्ग (Class) का बोध कराता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लडका, पर्वत, पुस्तक, घर, नगर, झरना, कुत्ता आदि ।

जातिवाचक संज्ञा तो एक वर्ग है और दुनिया मे उसकी इकाईयाँ अनेक होती है । लडका जातिवाचक संज्ञा है और दुनिया मे लडका वर्ग के अनेक विद्यमान है । जातिवाचक संज्ञा का आधार है- वस्तु आदि का समान गुण, और पहले से उन वर्ग गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य किसी मे पहचान कर नई वस्तु/प्राणी को भी हम तुरन्त पहचान लेते है ।

प्रश्नः- नीचे लिखे शब्दों को व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा के रूप मे छांटिऐ-
ब्रह्मपुत्र, पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाइट, फूल, कमल, हिमालय, अनाज, गेहूँ, कल्याणसोना (गेहूँ), गाय, जर्सी गाय, फल आम, लँगडा आम ।

उत्तरः- ऊपर के शब्दों मे केवल ब्रह्मपुत्र और हिमालय व्यक्तिवाचक संज्ञाऐं है शेष सभी जातिवाचक है दुनिया मे व्यक्तिवाचक संज्ञा केवल एक होती है और जातिवाचक-अनेक ।

1. द्रव्यवाचक :-

किसी पदार्थ या द्रव्य (द्रव यानी बहने वाली वस्तु-पानी, तेल, आदि, द्रव्य यानी पदार्थ जैसे- मिट्टी, चीनी, तेल आदि) का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लोहा, सोना, घी, मिट्टी, तेल, दूध, लकडी, ऊन आदि ।

इन संज्ञाओं को हम गिन नही सकते । दो लोहा, चार सोना आदि नही कर सकते, ये अगणनीय संज्ञाऐं है और ये मात्रात्मक या परिमाणात्मक है । इनमें से कुछ बहुवचन बनते है जैसे- मिट्टी,- मिट्टियाँ, लकडी-लकडियाँ आदि ।

2. समूहवाचक :-

ये संज्ञाऐं अनेक गणनीय संज्ञाओं के समूह से बनती है, और वे एकवचन एवं बहुवचन दोनो रूपों मे (सेना/सेनाऐं,/कक्षा/कक्षाऐं) प्रयुक्त हो सकती है । ये शब्द किसी व्यक्ति के वाचक न होकर समूह या समुदाय के वाचक होते है, जैसे- सेना, कक्षा, मंडली, जुलूस, परिवार, पुस्तकालय आदि ।

3. भाववाचक संज्ञा :-

जिन शब्दों से व्यक्तियों/पदार्थो के धर्म (Nature), गुण, दोष अवस्था (State), व्यापार (Activity), भाव स्वभाव या अवधारणा (Concept), विचार आदि का बोध होता है, वे भाववाचक संज्ञाऐं कहलाती है, जैसे कोमलता, बचपन, लम्बाई, बुढापा, शत्रुता, सलाह, मातृत्व, औचित्य, दासता, मित्रता आदि ।

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं :-

1. जातिवाचक संज्ञा से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगाकर)-
   लड़का-लड़कपन, मित्र-मित्रता, पशु-पशुता, आदमी-आदमीयत, चिकित्सक-चिकित्सा, चोर-चोरी, तरूण-तरूणाई, पुरूष-पुरूषत्व, मर्द-मर्दानगी आदि ।

2. सर्वनाम से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगाकर)-
   निज-निजत्व, अपना-अपनापन, सर्व-सर्वस्व, अह्म-अंहकार, मम्-ममता, ममत्व आदि ।

3. विशेषण से(विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगाकर)-
   बूढ़ा-बुढ़ापा, चतुर-चतुरता/चतुराई, मीठा-मिठास, मधुर-मधुरता/माधुर्य, खट्टा-खटास/खट्टापन, अरूण-अरूणिमा, कंजूस-कंजूसी, उचित-औचित्य, लघु-लघुता, आलसी-आलस्य, विद्वान-विद्वता गरीब-गरीबी, भूखा-भूख, परिष्कार, धीर-धैर्य/धीरज आदि ।

4. क्रिया से संज्ञा - (विभिन्न कृत प्रत्यक्ष लगाकर)-
   चढ़ना-चढ़ाई, चलना-चाल, दौड़ना-दौड़, सजाना-सजावट, उतारना-उतार, कमाना-कमाई, गाना-गान, जीना-जीवन, झुकना-झुकाव, खेलना-खेल, थकना-थकान, पहुंचना-पहुंच, जीतना-जीत, मिलाना-मिलावट, हँसना-हँसी, पीना-पान आदि ।

5. अव्यय से - निकट-निकटता, दूर- दूरी, नीचे-नीचता, ऊपर-ऊपरी, धिक्-धिक्कार आदि ।
   इस प्रकार ता, त्व, पन, ई, आई, आ, इयत, आहट, त, य आदि प्रत्यय लगाने से अन्य शब्द भाववाचक संज्ञाओं मे परिवर्तित हो जाते हैं । हिन्दी मे संज्ञाऐं लिंग, वचन तथा कारक द्वारा अपना रूप निर्धारण करती हैं । ये संज्ञा के विकारक तत्व कहलाते हैं ।

सर्वनाम

परिभाषा–
संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है –
जैसे– मै, तुम, वह, कौन, कोई, क्या आदि ।

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है– 'सबका नाम' अर्थात् जो शब्द सबके नामों के स्थान पर लडका/लडकी/कमरा आदि सभी संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होते है, वे सर्वनाम कहलाते है ।
यह पुनरूक्ति दोष को मिटाने के लिए प्रयोग किया जाता है ।

सर्वनाम के भेद
सर्वनाम के निम्नलिखित 6 भेद है –
1. पुरूषवाचक – उत्तम, मध्यम, अन्य, मे, तुम, वह
2. निश्चयवाचक – यह, ये, वह, वे
3. अनिश्चयवाचक – कोई, कुछ
4. प्रश्नवाचक – कौन, क्या
5. सम्बन्धवाचक – जो, सो
6. निजवाचक – आप, खुद, स्वयं

1. **पुरूषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)-** वक्ता, श्रोता या किसी अन्य के लिए जाने वाले कथन (पुरूष) हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । इसी आधार पर पुरूषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार माने गऐ है –

   ➢ उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम (First Person)– जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला (वक्ता) या लिखनेवाला (लेखक) अपने लिए करता है, उन्हे उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । मै, मेरी, मेरा, मुझे, हम, हमारा, हमारी, हमको आदि उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम है, जैसे –
   - मै अपने स्कूल गया ।
   - हम प्रदर्शनी देखने जाएँगे ।
   - इस विषय मे हमारा बोलना ठीक नही ।

   ➢ मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम (Second Person)– वक्ता या लेखक सुनने वाले (श्रोता) या पढनेवाले (पाठक) के लिए किए जाने वाले कथन हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हे मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । तू, तुम, तेरा, तेरी, तुम्हारा, तुझे, तुम्हें, आप, आपका, आपकी, अपना, अपनी, आपकों, अपने आदि मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम है । वाक्यों में इनका प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से के देखा जा सकता है ।
   1. तू बहुत अच्छा लिखती है ।
   2. तुम्हें गुरू जी ने बुलाया है ।
   3. आप सबके लिए पूजनीय है ।
   4. पहले अपने देखो ।

   अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम (Third Person)– जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता या लेखक, वक्ता एवं श्रोता को छोडकर किसी अन्य के लिए किए जाने वाले कथन हेतु किया जाता है, उन्हें अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । यह, वह, ये, वे उसका, उसकी, इसे, उसे, इन्हें, उन्हे, उनका, उनकी, उनको, उसको आदि अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम है जैसे:–
   - वह रोते–रोते सो गई ।
   - उसको बुलाकर समझाओं ।
   - उन्हें अपनी गलती पर पछतावा है ।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)-**
   जिन सर्वनामों के द्वारा दूरवर्ती या समीपवर्ती व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और निश्चित घटना व्यापार का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है जैसे–
   - यह कौन है ? यह तो श्याम है । (यहाँ 'यह' की ओर संकेत है, 'यह' पर जोर है ।)
   - ये रहे वे जिन्हें मै ढूँढ रहा था ।
   - गीता का घर वह है ।
   - वे जो बैठी है, अध्यापिकाऐं है ।

   इन वाक्यों मे यह, वह, ये, वे, निश्चयवाचक सर्वनाम है तथा यह, ये समीपवर्ती तथा वह वे सर्वनाम दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त हुए है ।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinate Pronoun)-**
   किसी अनिश्चत व्यक्ति, वस्तु, घटना, या व्यापार के लिए प्रयोग मे आने वाले सर्वनाम अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलातें है, जैसे– कोई किसी, कुछ । सजीव प्राणियों के लिए 'कोई', 'किसी' और निर्जीव पदार्थो के लिए 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है जैसे–
   - शायद बाहर कोई आया है (व्यक्ति)
   - किसी (व्यक्ति) से कुछ (वस्तु) मत लो ।
   - हमें कुछ तो खाना पडेगा । (वस्तु)

4. <u>प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)-</u>

किसी वस्तु, घटना या व्यापार के विषय मे प्रश्न का बोध कराने वाले शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते है । कौन, किसे, किसने, क्या आदि शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम है । इनमें भी कौन, किसे, किसने, किससे का प्रयोग व्यक्तियों के लिए और 'क्या, किसे, किससे' वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है उदाहरणार्थ-

- कवियों को किसने आमंत्रित किया था ? (व्यक्ति)
- बाजार जाने के लिए किसे कहूँ ? (व्यक्ति)
- बाहर कौन आया है ? (व्यक्ति)
- आप चाय के साथ क्या लेंगे ? (वस्तु)
- तुम किससे लिखोगे ? (वस्तु)

5. <u>संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)-</u>

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग एक शब्द/वाक्यांश का दूसरे शब्द / वाक्यांश से संबंध प्रकट करने के लिए (जो-सो) किया जाता है या जो प्रधान उपवाक्य से आश्रित उपवाक्यों का संबंध जोडने का कार्य करते हैं, उन्हे संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है । जो-सो, जिसे, वह, जो-वह, जैसा-वैसा, जिसकों-उसको, जिससे-उससे आदि शब्द संबंधवाचक सर्वनाम हैं, जैसे-

- जैसी करनी वैसी भरनी ।
- जिसे देखो, वही अत्यधिक व्यस्त है ।
- जितनी लंबी चादर, उतने ही पैर पसारिऐं ।

6. <u>निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)-</u>

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता के लिए या कर्ता के साथ अपनत्व प्रकट करने के लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते है । कुछ विद्वान निजवाचक सर्वनाम के वस्तुतः पुरूषवाचक सर्वनाम का ही एक भेद मानते हैं, और कुछ अलग । आप, अपने-आप, स्वयं, खुद स्वतः निज आदि निजवाचक सर्वनाम है यथा-

- मै अपने-आप कार्यालय ढूँढ लूँगा ।
- उसने खुद/स्वयं/स्वतः ही परेशानी मोल ले ली है ।
- आप स्वयं चलकर निरीक्षण कर लीजिए ।

इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यों मे प्रयुक्त अपने-आप, स्वयं, खुद निजवाचक सर्वनाम शब्दों का प्रयोग तीनो पुरूषों मे (उत्तम, अन्य, मध्यम) मे हो रहा है ।

विशेषण

परिभाषाः-
विशेषण वह शब्द-भेद है, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताता है । जैसे-
1. काली गाय अधिक दूध देती है ।
- योग्य व्यक्ति सदैव आदर के पात्र होते है ।
- कुछ लोग यहाँ आ रहे है ।
- दो बच्चे खेल रहे है ।

उपर्युक्त वाक्यो में 'काली' 'अधिक', 'योग्य' विशेषण क्रमशः गाय, दूध, व्यक्ति संज्ञाओं की विशेषता बताते है । इसी प्रकार 'कुछ' एवं 'दो' भी 'लोग' व 'बच्चों' (संज्ञाओं) के विशेषण है ।

विशेषण और विशेष्य- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते है, वे 'विशेषण' और जिन संज्ञाओं या सर्वनामों की विशेषता प्रकट की जाती है, वे शब्द 'विशेष्य' कहलाते है ।

विशेषण के भेद :- संज्ञा की विशेषता के प्रकार के आधार पर विशेषण के चार भेद माने गए हैं-

विशेषण के भेद
- गुणवाचक
- संख्यावाचक
- परिमाणवाचक
- सार्वनामिक/संकेतवाचक

1. **गुणवाचक विशेषण :-** जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) के गुण-आकार, रंग, दशा, काल, स्थान आदि का बोध कराते है, उन्हे गुणवाचक विशेषण कहते है जैसे-

गुण/दोषः- अच्छा, बुरा, सरल, कुटिल, ईमानदार, सच्चा, बेईमान, झूठा, दानवीर, शिष्ट दयालु,कृपालु, कंजूस, शांत, चतुर, गुस्सैल आदि ।

आकारः- लंबा, छोटा, चौडा, चौकोर, तिकोना, गोल बडा, ठिगना, नाटा, ऊँचा, नीचा, अंडाकार,त्रिभुजाकार आदि ।

रंगः- काला, पीला, लाल, सफेद, नीला, गुलाबी, हरा, सुनहरा, चमकीला, आसमानी आदि ।

स्वादः- खट्टा, मीठा, कडवा, नमकीन, कसैला, तीखा आदि ।

स्पर्शः- कठोर, नरम, खुरदरा, कोमल, चिकना, गरम आदि ।

गंधः- सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण, बदबूदार, खुशनुमा, सौंधा, गंधहीन ।

दिशाः- उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, पाश्चात्य, भीतरी, बाहरी आदि ।

दशाः- नया, पुराना, जीर्ण-शीर्ण, पिलपिला, ढीला, स्वस्थ, रोगी, सूखा, गाढा, पतला, पिछला, जमा आदि ।

कालः- प्राचीन, नवीन, आधुनिक, भावी, ऐतिहासिक, साप्ताहिक, मासिक, सुबह का भूला, नया, पुराना, ताजा आदि ।

स्थानः- ग्रामीण, भारतीय, रूसी, जापानी, बनारसी, देशी, विदेशी, बाहरी, तुर्की, वन्य, पहाडी, मैदानी, आदि ।

अवस्थाः- युवा, बूढा, तरूण, प्रौढ, अधेड, मुग्धा,धीर, गंभीर, अधीर, सहनशील आदि ।

वाक्यों मे कुछ उदाहरण है-
- अधिक गर्म दूध नही पीना चाहिए ।
- आम मीठा है ।
- संगमरमर चिकना पत्थर है ।
- आँखो की ज्योति के लिए हरा रंग अच्छा माना गया है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे गर्म, मीठा, चिकना, हरा गुणवाचक विशेषण है जो क्रमशः दूध की अवस्था, आम के स्वाद, पत्थर का स्पर्शबोध और रंग के गुण को व्यक्त रहे है ।

2. **संख्यावाचक विशेषण :-** गणनीय संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध करानेवाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते है । जैसे-
- कक्षा मे पचास लडके अध्ययन करते है ।
- माता जी ने एक दर्जन केले खरीदे है ।
- झगडे मे कई लोग मारे गए है ।

उपर्युक्त उदाहरणों मे पचास, एक दर्जन, कई संख्यावाचक विशेषण है जो कि क्रमशः लडके, केले, लोग संज्ञाओं की संख्यागत विशेषता का बोध कराते है । जातिवाचक या भाववाचक होता है ।

संख्यावाचक विशेषण के भेद :- संख्यावाचक विशेषण के विशेष्य की निश्चित और अनिश्चित संख्या के आधार पर दो भेद किए गए है ।
- निश्चित संख्यावाचक
- अनिश्चित संख्यावाचक

(क) **निश्चित संख्यावाचक :-** जहाँ विशेषण की निश्चित संख्या का बोध होता है ।
- कक्षा मे दस विद्यार्थी आए है ।
- दो दर्जन केले बीस रूपये के है ।
- आधा दरवाजा खुला हुआ है ।

इन वाक्यों मे आए हुये दस, दो दर्जन, आधा शब्द निश्चित संख्या का बोध कराते है ।

संख्यावाचक विशेषणों मे अपूर्णांक विशेषण- आधा, पौन, डेढ, एक चौथाई आदि तथा क्रमवाची विशेषण जैसे- पहला, दसवाँ आदि, गुणा/ आवृत्तिवाचक विशेषण, जैसे- दुगुना, चौगुना, समूहवाचक विशेषण, जैसे दोनो, चारो तथा प्रत्येकवाचक जैसे प्रति व्यक्ति, हर आदमी आदि होते है ।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध न कराकर उनकी संख्या का अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते हैं, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे- कुछ, कई, थोडे, कम, बहुत, काफी, अगणित, दर्जनों, हजारों, अधिक, कोई-सौ, सौ-एक, करीब सौ, कोई दो सौ इत्यादि । वाक्यों मे कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं-

- कुछ लडके मैदान मे खेल रहे है ।
- मेरे पास बहुत से रूपये है ।
- बस थोडे पन्ने लिखने बाकी हैं ।
- ट्रेन-दुर्घटना मे सैकडों व्यक्ति मारे गए ।
- सडक पर कोई-सौ लडके खडे थे ।

इन वाक्यों मे कुछ, बहुत-से, थोडे, सैकडों, कोई-सौ अनिश्चित संख्याओं का बोध कराते है ।

3. परिमाणवाचक :- मात्रात्मक, द्रव्यवाचक संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता को प्रकट करने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे-
   - पहलवान प्रतिदिन पाँच लीटर दूध पी जाता है ।
   - भिखारी को थोडा आटा दे दो ।

यहां 'पाँच लीटर दूध' 'थोडा आटा' व आटे का माप है जो गण्य नही है, केवल मापा जा सकता है, अतः वे परिमाणवाचक विशेषण है ।

परिमाणवाचक विशेषण माप-तौल की निश्चितता व अनिश्चितता के आधार पर दो प्रकार के माने गए है-

(क) निश्चित परिमाणवाचक- जो संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है, यथा-

- चार लीटर दूध लेकर आओ ।
- बाजार से दस किलो चीनी ले आना ।
- यह चैन पंद्रह ग्राम सोने की है ।
- उसके पास बीस एकड जमीन है ।
- हमे दस ट्रक भूसा चाहिए ।

उपर्युक्त वाक्यों मे चार लीटर, दस किलो, पंद्रह ग्राम, बीस एकड, दस ट्रक क्रमशः दूध, चीनी, सोना, जमीन और भूसे के निश्चित माप है, इसलिए ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है ।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक- जिन विशेषणों के द्वारा संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध न होकर अनिश्चित परिमाण का बोध होता है, उन्हे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है जैसे-

- वह ढेर सारा मक्खन खा गया । (अनिश्चित मक्खन)
- मुझे भी कुछ नाश्ता दे दो ।
- थोडा पानी देना ।
- जरा-सा आचार दे दो ।
- यहाँ ढेरों आम पडे है ।

उपर्युक्त उदाहरणों मे 'ढेर सारा', कुछ, थोडा, जरा-सा, ढेरों अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं, जो क्रमशः मक्खन, नाश्ता, पानी, आचार, आम की अनिश्चित माप का बोध कराते है ।अधिक मात्रा का बोध कराने के लिए परिमाणवाचक विशेषण के साथ 'ओ' जोड दिया जाता है ।

4. सार्वनामिक विशेषण :- जो सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आने के बजाय संज्ञा के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते है ।

सार्वनामिक विशेषण के चार भेद :-

(क) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण
जिनसे संज्ञा या सर्वनाम की निश्चययात्मकता का संकेत होता है, यथा
- उस व्यक्ति को बुलाइए । (व्यक्ति विशेष की ओर संकेत है)
- क्या यह पुस्तक तुम्हारी है ? (पुस्तक की ओर संकेत है)

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण :- इनसे संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चयात्मकता का बोध होता है, जैसेः-
- वहाँ कुछ भी वस्तु खाने के लिए नही मिलेगी
- छत पर कोई व्यक्ति खडा है ।

(ग) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण :- इन विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम से संबंधित प्रश्नों का बोध होता है जैसे :-
- वहाँ मैदान मे कौन छात्र दौड रहा है ?
- तुम्हारे लिए बाजार से क्या चीज लाऊँ ?
- तुम्हें किस लडके ने मारा है ?

उपर्युक्त उदाहरणों मे प्रयुक्त 'कौन' 'क्या' 'किस' आदि संज्ञा के पहले लगे है तथा विशेष्य से संबंधित प्रश्नों का बोध करा रहे है ।

(घ) संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण :- जिन विशेषणों से एक संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जोडा जाता है जैसेः-

- जो घडी मैंने कल खरीदी थी, वह खो गई है ।
- जिस कार्य को करने से नुकसान होता है, उस पर विचार करना मूर्खता है ।
- वह व्यक्ति सामने जा रहा है, जिससे तुम्हारा झगडा हुआ था ।

इन उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट है कि जो-वह, जिस-उस, वह-जिससे सार्वनामिक विशेषणों का संबंध वाक्यों मे प्रयुक्त अन्य विशेष्यों- क्रमशः घडी, कार्य और व्यक्ति से स्थापित किया गया है ।

क्रिया

वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसेः-

- मोहन खाना खा रहा है ।
- हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)
- पुस्तक अलमारी में है । (होना)

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है', 'है' क्रियापद है ।

वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद :-

अकर्मक और सकर्मक क्रियाः- किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है - सकर्मक और अकर्मक ।

(क) अकर्मक क्रिया :- जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसेः-

- नरेश दौड रहा है ।
- चिडिया उड रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पडता है और ये क्रियाऐं बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है ।

(ख) सकर्मक क्रिया :- जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है । सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे :-

1. राम पत्र लिखता है ।
2. लडके ने बेर खाए ।
3. मोहित पानी पीता है ।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है । सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद :-

अपूर्ण क्रिया - कुछ क्रियाओं का अपने-आप में अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे-

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'- विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा ।)
- अशोक जी हमारे गुरू थे । (गुरू-संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता ।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरू-दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है ।

पूर्ण क्रिया - जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे :-

1. लडका सोता है । 2. लडका पढता है ।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनो पद क्रियापद ही है । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है ।

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद :-

प्रेरणार्थक क्रिया - जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है ।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया- मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे -

- मैं गया हुआ था । (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था । (सुन- मुख्य क्रिया है तथा रहा था- सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रियाः- जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है जैसे :-

- सेठ ने मकान हथियाया । (हाथ-संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया । (फिल्म-संज्ञापद)
- लडकी बतियाई । (बात संज्ञापद)

पुर्वकालिक क्रियाः- जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पुर्वकालिक क्रिया कहलाती है । पुर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है- सोकर, उठकर, जाकर आदि ।

- बच्चे दूध पीकर सो गए । (सोने से पहले दूध पीया ।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया ।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया ।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पुर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनो क्रियाएँ दो अलग-अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है ।

तात्कालिक क्रियाः- यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है । इसमें और मुख्य क्रिया मे समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है ।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया ।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया ।

संयुक्त क्रियाः- जब दो या दो से अधिक क्रिया-धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है । संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे :-

- वह खाना खा चुका होगा ।
- दीक्षा लिखा करती होगी ।
- पानी बरसने लगा है ।
- मै यहाँ रोज आ जाया करता हूँ ।
- दोपहर मे लोग सो रहे होते है ।

इन सभी वाक्यों मे पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद-समूह संयुक्त क्रियाएँ है । सहायक क्रिया एक भी हो सकती है । (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है ।

लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है- चिह्न या पहचान ।
लिंग से तात्पर्य भाषा के ऐसे प्रावधानों से है जो वाक्य के कर्ता के स्त्री, पुरुष, निर्जीव हाने के अनुसार बदल जाते है । विश्व की लगभग एक चौथाई भाषाओं में किसी न किसी प्रकार की लिंग व्यवस्था है ।

हिन्दी में दो लिंग होते है - पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग, जबकि संस्कृत में तीन लिंग होते है- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग । फारसी जैसे भाषाओं में लिंग नहीं होता, और भी अंग्रेजी में लिंग सिर्फ सर्वनाम में होता है ।

उदाहरण

- मोहन पढता है- पढता का रूप पुल्लिंग है, इसका स्त्रीलिंग रूप 'पढती' है ।
- गीता गाती है- यहाँ, 'गाती' का रूप स्त्रीलिंग है ।

लिंग की परिभाषा (Definition of Gender)

- लिंग संस्कृत का शब्द हाता है जिसका अर्थ होता है निशाना । जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है उसे लिंग कहते हों इससे यह पता चलता है की वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का है।

उदाहरण

- पुरुष जाति में बैल, बकरा, मोर, मोहन, लडका, हाथी, शेर, घोडा, दरवाजा, पंखा, कुत्ता, भवन, पिता, भाई आदि ।
- स्त्री जाति में गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लडकी, हथनी, शेरनी, घोडी, खिडकी , कुतिया, माता, बहन आदि।

लिंग के निर्माण में आई कठिनाई और उसका हल

- हिंदी में लिंग के निर्णय का आधार संस्कृत के नियम ही है । संस्कृत में हिंदी से अलग एक तीसरा लिंग भी है जिसे नपुंसकलिंग कहते हैं । नपुंसकलिंग में अप्राणीवाचक संज्ञाओं को रखा जाता है। हिंदी में अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंग निर्णय में सबसे अधिक कठिनाई हिंदी न जानने वालों को होते है ।
- जिनकी मातृभाषा हिंदी होती है उन्हें सहज व्यवहार के कारण लिंग निर्णय में परेशानी नहीं होती लेकिन इनमें भी एक समस्या है की कुछ पुल्लिंग शब्दों के पर्यायवाची स्त्रीलिंग है और कुछ स्त्रीलिंग के पुल्लिंग । जैसे :- पुस्तक को स्त्रीलिंग कहते हैं और ग्रन्थ को पुल्लिंग कहते है ।

हिंदी में लिंग

व्याकरणाचार्य ने लिंग निर्णय के कुछ नियम बताये है लेकिन उन सभी में अपवाद है । लेकिन फिर भी लिंग निर्णय के कुछ नियम इस प्रकार है -

1. जब प्राणीवाचक संज्ञा पुरुष जाति का बोध कराएँ तो वे पुल्लिंग होते है और जब स्त्रीलिंग का बोध कराएँ तो स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- कुत्ता, हाथी, शेर पुल्लिंग है और कुतिया, हथनी, शेरनी स्त्रीलिंग है ।
2. कुछ प्राणीवाचक संज्ञा पुरुष जाति का बोध कराएँ तो वे पुल्लिंग हाते है और जब स्त्रीलिंग का बोध कराएँ तो स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- खरगोश, खटमल, गैंडा, भालू, उल्लू आदि ।
3. कुछ प्राणीवाचक संज्ञा जब पुरूष और स्त्री दोनों का बोध कराएँ तो वे नित्य स्त्रीलिंग में शामिल हो जाते है ।
जैसे :- कोमल, चील, तीतली, छिपकली आदि ।

लिंग के भेद

संसार में तीन जातियाँ होती है - पुरूष, स्त्री, जड । इन्ही जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये है ।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग
3. नपुंसकलिंग

पुल्लिंग क्या होता है -

जिन संज्ञा के शब्दों से पुरूष जाति का पता चलता है उसे पुल्लिंग कहते है ।
जैसे :- पिता, राजा, घोडा, कुत्ता, बंदर, हंस, बकरा, लडका, आदमी, सेठ, मकान, लोहा, चश्मा, दुःख, प्रेम, लगाव, खटमल, फूल, नाटक, पर्वत, पेड, मुर्गा, बैल, भाई, शिव, हनुमान, शेर आदि ।

पुल्लिंग अपवाद

पक्षी, फरवरी, एवरेस्ट, मोतिया, दिल्ली, स्त्रीत्व आदि ।

पुल्लिंग की पहचान

1. जिन शब्दों के पीछे अ, त्व, आ, आव, पा, पन, न आदि प्रत्यय आये वे पुल्लिंग होते हैं जैसे :- मन, तन, वन, शेर, राम, कृष्ण, सतीत्व, देवत्व, मोटापा, चढाव, बुढापा, लडकपन, बचपन, लने -देन आदि ।
2. पर्वतों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
जैसे :- हिमालय, हिमाचल, विंध्याचल, सतपुडा, आल्पस, यूराल, कंचनजंगा, फ्यूजियामा, कैलाश, मलयाचल, माउण्ट एवरेस्ट आदि ।
3. दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि ।
4. देशों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- भारत, चीन, ईरान, यूनान, रूस, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, उत्तरप्रदेश, हिमाचल, मध्यप्रदेश आदि ।
5. धातुओं के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- सोना, ताँबा, पीतल, लोहा, चाँदी, पारा आदि ।
6. नक्षत्रों के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- सूर्य, चन्द्र, राहू, आकाश, शनि, बुध, बृहस्पति, मंगल, शुक्र आदि ।
7. महीनों के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- फरवरी, मार्च, चैत्र, आषाढ, फाल्गुन आदि ।
8. द्रवों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
जैसे :- पानी, तेल, पेट्रोल, घी, शरबत, दही, दूध आदि ।
9. पेडों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
जैसे :- केला, पपीता, शीशम, सागौन, जामुन, बरगद, पीपल, नीम, आम, अमरूद, देवदार, अनार, अशोक, पलाश आदि ।
10. सागर के नाम पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- हिन्द महासागर, प्रशांत महासागर, अरब महासागर आदि ।
11. समय के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- घंटा, पल, क्षण, मिनट, सेकण्ड आदि
12. अनाजों के नाम भी पुल्लिंग हाते हैं ।
जैसे :- गेहूँ, बाजरा, चना, जौ आदि ।
13. वर्णमाला के अक्षरों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- अ, उ, ए, ओ, क, ख, ग, घ, च, छ, य, र, ल, व श आदि ।
14. प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुरुष जाति का ही बोध कराते है ।
जैसे :- बालक , गीदड, कौआ, कवि, साधु, खटमल, भेडिया, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी आदि।
15. समूह वाचक संज्ञा भी पुल्लिंग होती है । जैसे :- मण्डल, समाज, दल, समूह, सभा, वर्ग, पंचायत आदि।
16. भारी और बेडौल वस्तु भी पुल्लिंग होती है । जैसे :- जूता, रस्सा, पहाड, लोटा आदि ।
17. रत्नों के नाम भी पुल्लिंग होते है । जैसे :- नीलम, पुखराज, मूँगा, माणिक्य, पन्ना, मोती, हीरा आदि ।
18. फूलों के नाम पुल्लिंग होते है ।
जैसे :- गेंदा, मोतिया, कमल, गुलाब आदि ।
19. द्वीप भी पुल्लिंग होते है ।
जैसे :- अंडमान-निकोबार जावा, क्यूबा, न्यू फाउंलैंड आदि ।
20. शरीर के अंग पुल्लिंग होते है । जैसे :-हाथ, पैर, गला, अंगूठा, कान, सिर मुँह, घुटना, हृदय, दांत, मस्तक आदि ।
21. दान, खाना, वाला से खत्म होने वाले शब्द हमेशा पुल्लिंग होते है । जैसे :- खानदान, पीकदान, दवाखाना, जेलखाना, दूधवाला, दुकान वाले आदि ।
22. आकारान्त संज्ञा पुल्लिंग होती है ।
जैसे :- गुस्सा, चश्मा, पैसा, छाता आदि ।

स्त्रीलिंग क्या होता है -

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है उसे स्त्रीलिंग कहते है जैसे :- हंसिनी, लडकी, बकरी, माता, रानी, जूं, सुंई गर्दन, लज्जा, घोडी, कुतिया, बंदरिया, कुर्सी, पत्ती, नदी, शाखा, मुर्गी, गाय, बहन, यमुना, बुआ, लक्ष्मी, गंगा, औरत, शेरनी, नारी, झोंपडी, लोमडी आदि ।

स्त्रीलिंग के अपवाद

जैसे :- जनवरी, मई, जुलाई, पृथ्वी, मक्खी, ज्वार, अरहर, मूँग, चाय, कॉफी, लस्सी, चटनी, इ, ई, ऋ, जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ, सभा, कक्षा, संतान, प्रथम, तिथि, छाया, खटास, मिठास, आदि ।

स्त्रीलिंग प्रत्यय

जब पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तब प्रत्ययों को शब्दों में जोडा जाता है जिन्हें स्त्रीलिंग प्रत्यय कहते है ।
जैसे :- ई = बडा - बडी, भला- भली आदि ।
इनी = योगी - योगिनी , कमल- कमलिनी आदि ।
इन = धोबी - धोबिन, तेल - तेली आदि ।
नि = मोर - मोरनी, चोर - चोरनी आदि ।
आनी = जेठ - जेठानी , देवर देवरानी आदि ।
आइन = ठाकुर - ठकुराइन, पंडित - पण्डिताइन आदि ।
इया = बेटा - बिटिया, लाटो - लुटिया आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. जिन संज्ञा शब्दों के पीछे ख, ट, वट, हट, आनी आदि आयें वे सभी स्त्रीलिंग होते हैं
जैसे :- कडवाहट, आहट, बनावट, शत्रुता, मूर्खता, मिठाई, छाया, प्यास, ईख, भूख, चोख, राख, कोख, लाख, देखरेख झंझट, आहट, चिकनाहट सजावट, इन्द्राणी, जेठानी, ठकुरानी, राजस्थानी आदि ।
2. अनुस्वारांत, ईकारांत, ऊकारांत, तकारांत, सकारांत आदि संज्ञाएँ आती है वे स्त्रीलिंग होती हैं । जैसे :- रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी, रात, बात, छत, भीत, लू, बालू, दारू, सरसों, खडाऊं, प्यास, वास, साँस, नानी, बेटी, मामी, भाभी आदि
3. भाषा, बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।
जैसे :- हिंदी, संस्कृत, देवनागरी, पहाडी, अंग्रेजी, पंजाबी गुरुमुखी, फ्रांसीसी , अरबी, फारसी, जर्मन, बंगाली रूसी आदि ।
4. नदियों के नाम स्त्रीलिंग हाते हैं :- जैसे :- गंगा, यमुना, गोदावरी , सरस्वती, रावी, कावेरी, कृष्णा, व्यास, सतलज, झेलम, ताप्ती, नर्मदा आदि ।
5. तरीखो और तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसेः- पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, पृथ्वी, अमावस्या, एकादशी, चतुर्थी, प्रथमा आदि ।
6. नक्षत्रो के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे :- अश्विनी, भरणी, रोहिणी, रवे ती, मृगशिरा, चित्रा आदि ।
7. हमेशा स्त्रीलिंग रहने वाली संज्ञा होती है । जैसे :- मक्खी, कोयल, मछली, तितली, मैना आदि ।
8. समूहवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- भीड, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि ।
प्राणीवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- धाय, संतान, सौतन आदि ।
9. पुस्तकों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।
जैसे :- कुरान, रामायण, गीता, रामचरितमानस, बाइबल, महाभारत आदि ।
10. आहारो के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।
जैसे :- सब्जी, दाल, कचौरी, पूरी, रोटी, पकोडी आदि ।
11. शरीर के अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं जैसे :- आँख, नाक, जीभ, पलक, उँगली, ठोडी आदि ।
12. आभुष्ण और वस्त्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे :- साडी, सलवार, चुन्नी, धोती, टोपी, पेंट, कमीज, पगडी माला, चूडी, बिंदी, कंघी, नथ, अंगूठी आदि ।
13. मसालों के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं ।
जैसे :- दालचीनी लौंग, हल्दी, मिर्च, धनिया, इलायची, अजवाइन, सौंफ, चाय आदि ।
14. राशि के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे :- कुम्भ, मीन, तुला, सिंह, मेष, कर्क आदि ।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार हैं

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार गवर्नर, वकी, डॉक्टर, सेक्रेटरी प्रोफेसर, शिशु दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, श्रवास, मंत्री आदि ।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम इस प्रकार हैं

1. अ, आ पुल्लिंग शब्दों को जब 'ई' कर दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं :-
   - गूँगा = गूँगी
   - गधा = गधी
   - देव = देवी
   - नर = नारी
   - नाला = नाली

2. जब अ, आ, वा आदि पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदला जाता है तो अ, आ, तथा वा की जगह पर इया लगा दिया जाता है । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं :-
   - लोटा = लुटिया
   - बन्दर = बंदरिया
   - बूढा = बुढिया
   - बेटा = बिटिया
   - चिडा = चिडिया

3. जब 'अक' जैसे तत्सम शब्दों में 'इका' जोडकर भी स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं ।
तत्सम शब्द + इका = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं ।
   - अध्यापक + इका = अध्यापिका
   - पत्र + इका = पत्रिका
   - चालक + इका = चालिका
   - सेवक + इका = सेविका
   - लेखक + इका = लेखिका
   - गायक + इका = गायिका

- पाठक + इका = पाठिका
- संपादक + इका = संपादिका

4. जब पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तो कभी कभी नर या मादा लगाना पडता है ।

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं :-

- तोता = मादा तोता
- खरगोश = मादा खरगोश
- मच्छर = मादा मच्छर
- जिराफ = मादा जिराफ
- खटमल = मादा खटमल
- मगरमच्छ = मादा मगरमच्छ
- उल्लू = मादा उल्लू
- कोयल = नर कोयल
- चील = नर चील
- मकडी = नर मकडी
- भेड. = नर भेड
- मक्खी = नर मक्खी
- गिलहरी = नर गिलहरी
- मैना = नर मैना
- कछुआ = नर कछुआ
- भालू = मादा भालू
- भेडिया = मादा भेडिया

5. कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से स्त्री -पुरुष के स्वयं में ही जोडे होते हैं । कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बिल्कुल उल्टे होते हैं ।
पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं-

- राजा = रानी
- सम्राट = सम्राज्ञी
- पिता = माता
- भाई = बहन
- वर = वधू
- पति = पत्नी
- मर्द = औरत
- पुरुष = स्त्री
- बैल = गाय
- पुत्र = कन्या
- फूफा = बुआ =

6. कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग न हो पाने की वजह से उनमें 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।
पुल्लिंग + आनी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं-

- ठाकुर + आनी = ठकुरानी
- सेठ + आनी = सेठानी
- चौधरी + आनी = चौधरानी
- देवर + आनी = देवरानी
- नौकर + आनी = नौकरानी
- इंद्र + आनी = इन्द्राणी
- जेठ +आनी = जेठानी
- मेहतर + आनी = मेहतरानी
- पंडित + आनी = पंडितानी

7. कभी कभी पुल्लिंग के कुछ शब्दों में इन जोडकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है । पुल्लिंग + 'इन' = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं -

- साँप + इन = साँपिन
- सुनार + इन = सुनारिन
- नाती + इन = नातिन
- दर्जी + इन = दर्जिन
- कुम्हार + इन = कुम्हारिन
- लुहार+ इन = लुहारिन
- माली + इन = मालिन
- धोबी + इन = धोबिन
- बाघ + इन = बाघिन

8. कभी कभी बहुत से शब्दों में 'आइन' जोडकर स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं। पुल्लिंग + आइन = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं :-

- चौधरी + आइन = चौधराइन
- हलवाई + आइन = हलवाइन
- गुरु + आइन = गुरुआइन
- पंडित + आइन = पण्डिताइन
- ठाकुर + आइन = ठकुराइन
- बाबू + आइन = बबुआइन

9. जब पुल्लिंग शब्दों में ता की जगह पर 'त्री' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग बन जाते हैं । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं –

- नेता = नेत्री
- दाता = दात्री
- अभिनेता = अभिनेत्री
- रचयिता = रचयित्री
- विधाता = विधात्री
- वक्ता = वक्त्री
- धाता = धात्री

10. जब पुल्लिंग के जाति और भाव बताने वाले शब्दों में 'नी' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं । पुल्लिंग शब्द + नी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है ।

- सियार + नी = सियारनी
- हिन्दू + नी = हिन्दुनी
- ऊँट + नी = ऊँटनी

वचन

- वचन का शाब्दिक अर्थ संख्यावचन होता है। संख्यावचन को ही वचन कहते है। वचन का एक अर्थ कहना भी होता है । संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति वस्तु के एक से अधिक होने का या एक होने का पता चले उसे वचन कहते हैं । अथार्त संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं अर्थात संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से हमें संख्या का पता चले उसे वचन कहते हैं ।

- भाषाविज्ञान में वचन (Number) एक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया आदि की व्याकरण सम्बन्धी श्रेणी है जो इनकी संख्या की सूचना देती है (एक, दो, अनेक आदि)। अधिकांश भाषाओं में दो वचन ही होते हैं- एकवचन तथा बहुवचन, किन्तु संस्कृत तथा कुछ और भाषाओं में द्विवचन भी होता है।

  जैसे :- लडकी खेलती है ।
  - लडकियाँ खेलती है ।

वचन के भेद

हिन्दी व्याकरण में वचन दो प्रकार के होते है - एकवचन, बहुवचन जबकि संस्कृत व्याकरण में वचन तीन प्रकार के होते है- एकवचन, द्विवचन, बहुवचन । और अंग्रेजी व्याकरण में वचन दो प्रकार के होते - Singular और Plural

1. एकवचन

- जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक होने का पता चलता है उसे एकवचन कहते हैं ।

  जैसे- लडका लडकी गाय, सिपाही, बच्चा, कपडा, माता, पिता, माला, पुस्तक, स्त्री, टोपी, बन्दर, मोर, बेटी , घोडा, नदी, कमरा घडी, घर, पर्वत, मैं, वह, यह, रुपया, बकरी, गाडी, माली, अध्यापक केला, चिडिया, संतरा, गमला, तोता, चूहा आदि ।

2. बहुवचन

- जिस विकारी शब्द या संज्ञा के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक से अधिक या अनेक होने का पता चलता है उसे बहुवचन कहते हैं ।

  जैसे - लडके, गायें, कपडे, टोपियाँ, मालाएँ, माताएँ, पुस्तकें, वधुएँ, गुरुजन, रोटियाँ, पेंसिलें स्त्रियाँ, बेटे, बेटियाँ, केले, गमले, चूहे, तोते घोडे, घरों, पर्वतों, नदियों, हम, वे, ये, लताएँ, लडकियाँ, गाडियाँ, बकरियाँ रुपए ।

एकवचन और बहुवचन के कुछ नियम इस प्रकार है

1. आदरणीय या सम्माननीय व्यक्तियों के लिए बहुवचन का भी प्रयोग होता है लेकिन एकवचन व्यक्तिवाचक संज्ञा को बहुवचन में ही प्रयोग कर दिया जाता है।

   जैसे -

   - गाँधीजी चंपारन आये थे ।
   - शास्त्रीजी बहुत ही सरल स्वभाव के थे ।
   - गुरूजी आज नहीं आये ।
   - पापाजी कल कलकत्ता जायेंगे ।
   - गाँधीजी छुआछूत के विरोधी थे ।
   - श्री रामचन्द्र वीर थे ।

2. एकवचन और बहुवचन का प्रयोग संबंध दर्शाने के लिए समान रूप से किया जाता है ।
   जैसे - नाना, मामी , ताई, ताऊ, नानी, मामा, चाचा, चाची, दादा, दादी आदि ।

3. द्रव्य की सूचना देने वाली द्रव्यसूचक संज्ञाओं का प्रयोग केवल एकवचन में ही होता है ।
   जैसे : तेल, घी, पानी दूध, दही, लस्सी, रायता आदि ।

4. वचन के कुछ शब्दों का प्रयोग हमेशा ही बहुवचन में किया जाता है।
   जैसे - दाम, दर्शन, प्राण, आँसू, लोग, अक्षत, होश, समाचार, हस्ताक्षर, दर्शक, भाग्य केश, रोम, अश्रु, आशीर्वाद आदि ।

   जैसे-
   - आपके हस्ताक्षर बहुत ही अलग हैं ।
   - लोग कहते रहते हैं ।
   - आपके दर्शन मिलना मुश्किल है ।
   - तुम्हारे दाम ज्यादा हैं ।
   - आज के समाचार क्या हैं ?
   - आपका आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हो गया हूँ ।